-: षष्ठ अध्याय :-

"गुनाहों का देवता" उपन्यास का उद्देश्य

षाष्ठ अध्याय

"'गुनाहों का देवता' उपन्यास का उद्देश्य"

उपन्यास का छटा तत्व 'उद्देश्य' है। उपन्यास के कलापक्ष के विकास के साथ-साथ उद्देश्य तत्व का भी महत्त्व बढ़ता जा रहा है। प्राचीन काल में कथाओं की रचना, उपदेशात्मकता जिनका आधार प्राय: नैतिक होता था और मनोरंजन जिसका आधार कौतुहल और कल्पना होता था, इन दो उद्देश्यों से ही की जाती थी। आधुनिक काल के कुछ समय पहले ही उपन्यास के उद्देश्यतत्त्व में विस्तार मिलने लगा है। अब केवल उपदेशात्मकता और मनोरंजन ये ही दो उद्देश्य नहीं रहे हैं।

आधुनिक उपन्यासों में उद्देश्य तत्व के प्रति विशेष आग्रह दिखाई देता है। डा.इन्दु वशिष्ठ के शब्दों में - "प्रारंभिक उपन्यासों में उपन्यासकार का उद्देश्य समाजसुधार करना था, तथा व्यक्ति का नैतिक उध्दार करना था। इन दोनों विधायों में अधिक महत्त्व 'जीवन को अच्छी तरह समझने' पर दिया गया था।"[१] आज का उपन्यासकार ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक अथवा पूर्णत: काल्पनिक किसी भी प्रकार की रचना किसी-न-किसी उद्देश्य से करता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि, प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से प्राय: सभी उपन्यासो की रचना के पीछे कोई-न-कोई विशिष्ट उद्देश्य या जीवन के प्रति विशिष्ट दृष्टिकोण मिलता है।

साहित्य समाज की विभिन्न धाराओं, विभिन्न दिशाओं तथा विभिन्न गतिविधियों का सत्य रूप है। इसी रूप का सत्य मूल्यांकन करना साहित्यकार का प्रमुख दायित्व है। नीति शिक्षा देना, मनोरंजन करना, कौतुहल की सृष्टि करना,

---

१ डा.इन्दु वशिष्ठ -'उपन्यासकार आ.भूरेसेनशास्त्री' - पृ.१९।

लोगों की या समाजसुधार की भावना, समस्या चित्रण, राजनीतिक उद्देश्य, मार्क्सवादी उद्देश्य, जीवन दर्शन का प्रकटीकरण आदि कई उद्देश्यों से उपन्यास लिखा जाता है।

धर्मवीर भारती जी के 'गुनाहों का देवता' इस उपन्यास को कुछ लोगों ने तथाकथित 'आदर्शोन्मुख यथार्थवादी उपन्यास' कहा है, किसी ने इसे 'रोमांटिक प्रेमकथा'[१] कहा है : किसी ने इसे 'चन्दर और सुधा की प्रेम कहानी' कहा है। धर्मवीर भारती जी ने स्वयं इसे 'मध्यवर्गीय जीवन की कहानी' कहा है।

इस उपन्यास को लिखने के पीछे भारती जी के भी कई उद्देश्य रहे हैं। इन सबमें सबसे प्रमुख है - स्त्री-पुरुष के अन्तर्-बाह्य संबंधों को परखना। इसके साथ ही अन्य भी कई उद्देश्य रहे हैं जैसे -- प्रेम के विविध पहलूओं का चित्रण कर आदर्श प्रेम के स्वरुप की प्रतिष्ठापना करना, मध्यवर्गीय जीवन की विशिष्ट वृत्तिका चित्रण करना, रुढ़ी-परम्पराओं की व्यर्थता को दर्शाना, नारी शिक्षा की स्थिति को दर्शाना, नैतीक आदर्श की रक्षा करना, नारी के अंतरंग का चित्रण करना, मानवी मूल्यों के विघटन को दिखाना, समाज की समस्याओं का चित्रण करना आदि।

अब हम एक-एक उद्देश्य का विश्लेषण करेंगे।

(१) स्त्री-पुरुष के अंतर्बाह्य सम्बन्धों को परखना --

धर्मवीर भारती ने 'गुनाहों का देवता' उपन्यास में विभिन्न युगलों की स्थापना कर स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के विविध कोनों को उजागर करने की कोशिश की है। स्त्री-पुरुष के पारिवारिक, सामाजिक एवं यौन सम्बन्धों के सुखद एवं दु:खद परिणामों को उद्घाटित किया है। उनकी रचनाओं की मूल-संवेदना 'प्रेम' रही है। प्रेम के व्यक्तिमूलक पक्ष को उन्होंने चित्रित किया है। सामाजिक समस्याओं के विशाल रास्तों से हटकर उनकी दृष्टि व्यक्ति के प्रेम की दिशा में पड़ी है। "नर-नारी के प्रेम सम्बन्धों को विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रस्तुत करना उपन्यासकार का लक्ष्य रहा है।"[२] क्या प्रेम एक पवित्र भावानुभूति है ? क्या प्रेम की अन्तिम परिणति विवाह और तृप्ति है ? इन प्रश्नों को भारती ने व्यक्तिवादी

---

१ डा. चंद्रभानु सोनवणे -- 'धर्मवीर भारती का साहित्य-सृजन के विविध रंग' - पृ. ९५।

२ डा. एम. के. जोसफ -- 'हिन्दी उपन्यासों में व्यक्तिवादी चेतना' - पृ. ३९।

परिप्रेक्ष्य में उठाया हैं । इसके लिए उपन्यासकार ने नायक को आधार बनाकर उसके प्रेम और विकृति को चित्रित किया हैं ।

जिस प्रकार भगवतीचरण वर्मा ने 'चित्रलेखा' उपन्यास में पाप और पुण्य की समस्या को परिस्थितियों के संघर्ष के माध्यम से चित्रित किया है उसी प्रकार 'गुनाहों का देवता' में भावना और वासना का द्वन्द्व दिखाया है । इसमें मुख्य पात्र नायक चन्दर और नायिका सुधा एक दूसरे से प्यार करते हैं लेकिन वह भावनिक प्यार है, उसमें वासना का रूप हम नहीं देखते जब कि, पम्मी जैसे पात्रों के माध्यम से प्रेम के वासनात्मक रूप दिखाकर शारीरिक सम्बन्ध दिखाये है । "ईसाई लड़की पम्मी इस उपन्यास की एकमात्र पात्र है जो संस्कारत: यौन पवित्रता को महत्त्व न देकर प्रेम को शारीरिक भूख मानती है ।[१]" इस संघर्ष में अंतत: सुधा के आंतरिक प्यार की ही जीत हो जाती है और उसी के महत्त्व को प्रस्थापित करना ही लेखक का उद्देश्य रहा है । इस उपन्यास की सभी घटनाएँ,लेखक का विश्लेषण और परिवेश चित्रण सब जिस उद्देश्य की ओर उन्मुख है वह है - नर-नारी सम्बन्धों का निरूपण,मानवीय सम्बन्धों में सेक्स की उपयोगिता और अनिवार्यता का निरूपण । इसकी सिध्दि के विषय में लेखक कोई पूर्वाग्रह लेकर नहीं चलते हैं ।

"पूर्वार्ध्द की नियंत्रीत उच्छृंखलता और उत्तरार्ध्द की अनियंत्रित पीड़ा में संतुलन-संयमन है और यह संयमन कृति के मुख्य पात्र में प्रभावी है । फलत: संपूर्ण कृति में कहीं पर भी हल्कापन नहीं है । नर-नारी के सम्बन्धों में सनातन देह - पवित्रता बोध को ऊँचो,उदात्त और अभिजात उड़ान कृति के संपूर्ण अर्थ के स्तर पर पहुँचकर जिस प्रकार विरोधी अर्थ - चमत्कार में परिणत हो जाती है, वह उपन्यास कला के विशिष्ट प्रयोग का द्योतक है ।"[२]

इस प्रकार वासना और भावना,सेक्स और प्रेम,प्रेम और विवाह आदि विभिन्न आयामों को प्रस्तुत करना ही लेखक का उद्देश्य रहा है । इस उपन्यास

---

१ डा.त्रिभुवनसिंह -'हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद' - पृ.५३७ ।

२ डा.विवेकी राय-'हिन्दी उपन्यास उत्तरशती की उपलब्धियाँ' - पृ.१४४ ।

में यही एक महत्वपूर्ण बात लेखक ने बतायी है इसलिए मुझे लगता है कि स्त्री-पुरुषों के अंतर्बाह्य सम्बन्धों को परखना यही इस उपन्यास का मुख्य उद्देश्य है ।

(२) प्रेम के विविध रूपों का चित्रण करना --

"'गुनाहों का देवता' यह एक दु:खान्त प्रेमकथा है । इसमें सभी पात्र प्यार करते है परंतु हर-एक के प्रेम करने का अंदाज अलग-अलग है । इसमें प्रेम के प्लेटोनिक रूप को दिखाया गया है । "'गुनाहों का देवता' उपन्यास एकांतिक प्रेम की अभिव्यक्ति है, उसमें सामाजिकता तत्व पूर्णत: उपेक्षित है ।"[१] इसमें प्रेम के निम्नलिखित रूपों को पात्रों के माध्यम से चित्रित किया है --

(क) भावुक प्रेम --

इस उपन्यास की नायिका सुधा चन्दर से जो प्यार करती है वह शारीरिक नहीं है सिर्फ भावनात्मक स्तरपर उससे प्यार करती है । उससे शादी करने की बात वह सोच भी नहीं सकती । उसे जब पम्मी ने पूछा कि, वह चन्दर से प्यार करती है, तो वह इनकार करती है । वह चन्दर से कहती है -- "मैं तुमसे प्यार नहीं करती, मैं तुमसे जाने क्या करती हूँ ।"[२] वह उससे कहती है - "तुमने मुझे जो कुछ भी दिया है वह प्यार से कहीं ज्यादा ऊँचा है और प्यार से कहीं ज्यादा महान है ।"[३]

सुधा चन्दर को इतना चाहती है कि, उसके आदेश पर इच्छा के विरुध्द कैलाश से शादी के लिए तैयार होती है । यहाँ तक कि उसके आदेश से मृत्युशय्यापर भी हँसने को तैयार है । वह चन्दर को गंभीर देखकर नहीं समझ पाती कि, वह क्या करें ! परेशान-सी हो जाती है ।

---

१ डा.चंद्रभानु सोनवणे - 'धर्मवीर भारती का साहित्य' : सृजन के विविध रंग - पृ.९५ ।

२ डा.धर्मवीर भारती - 'गुनाहों का देवता' - पृ.१५२ ।

३ वही वही पृ.१५७ ।

सुधा शादी के बाद कैलाश को अपना शरीर तो समर्पित कर देती है परंतु वह उसे अपना मन नहीं दे पाती । वह हमेशा चंदर की फिक्र में लगी रहती है । अपने जीवन के अंततक वह चन्दर को प्यार करती है इसलिए वह उसकी हर गलती को माफ कर देती है और मृत्यु के समय भी उसके पैर छूकर उसी की बाँह में लुढ़क जाती है ।

इस प्रकार सुधा के भावुक प्यार को दिखलाकर उपन्यासकार ने सुधा जैसी भावनात्मक प्यार करनेवाली आदर्श प्रेमिका को उभारकर यह दिखाया है कि इस समाज में आदर्श प्रेमिकाएँ हो सकती हैं ।

(ख) वासनाजन्य प्रेम --

पम्मी के माध्यम से उपन्यासकार ने उपन्यास में प्यार के वासनात्मक पहलू को दिखाया है । पम्मी पहले से चन्दर को पाना चाहती थी इसलिए सुधा से नफरत की बात कर वह चन्दर की दोस्ती प्राप्त कर लेती है लेकिन जब चन्दर सुधा को ठुकराता है उस वक्त उसकी उदासी का फायदा उठाकर पम्मी अपने मोहजाल में चन्दर को फँसा लेती है । पहले तो वह कहती है कि, "मैं विवाहित जीवन के वासनात्मक पहलू से घबरा उठी थी ।"[१] परंतु बाद में वही पम्मी यह भी कहती है -- "कपूर, सेक्स उतना बुरा नहीं है जितना मैं समझती थी ।"[२]

इस प्रकार पम्मी में वासना की तीव्रता और तीखापन है । लेकिन अंत में उसका पति के पास वापस चले जाने के प्रसंग द्वारा लेखक ने शादी संबंधों का स्थायी महत्व दर्शाया है ।

(ग) पागलता से युक्त प्रेम ---

बर्टी अपनी पत्नी से बेहद प्यार करता था, जो एक बिशप की भावुक लड़की थी । उसने गुलाब का बाग लगाया था जहाँ वे हमेशा बैठे रहते थे । बाद में उसने अपनी बेटी का नाम भी 'रोज' रखा था । एक दिन पती-पत्नी क्लब में -

---

१ डा. धर्मवीर भारती - 'गुनाहों का देवता' - पृ. १०५ ।

२ वही वही पृ. २४३ ।

चले जाते हैं। क्लब में बर्टी का अपनी पत्नीपर ज्यादा ध्यान था और बर्टी ने उसका हात दबाया तो वह चीख पड़ी। घर आकर उन दोनों में झगड़ा हो गया। धीरे-धीरे वह उससे दूर हटने लगी और एक सार्जेण्ट से प्यार करने लगी। लेकिन उसकी बिमारी में उसने बर्टी की सेवा की। बर्टी यह मानने को तैयार ही नहीं था कि, वह लड़की सार्जेण्ट की है। उस बच्ची को जनम देते वक्त उसकी पत्नी मर गई। उसके बाद वह पागल-सा हो गया, बिमार रहने लगा। उसकी बेटी को भी साप ने काट खाया तब से वह बिलकूल ही पागल हो गया। उसका मनोविश्लेषण उपन्यासकार ने किया है।

पत्नी की मौत के बाद वह उन फूलों की निगरानी करने लगा और मानने लगा कि, उन फूलों में उसकी पत्नी है। फूल चुरा ले जानेवालों को वह गालियाँ देता था। उसके जीवन में जेनी के आनेपर भी उसका पागलपन नहीं छूटा। इस प्रकार बर्टी के पागलता से युक्त प्रेम को दिखाया है जिसे 'पागल प्रेमी' का सम्बोधन सार्थक लगता है।

(घ) निरुद्देश्य प्रेम --

चन्दर के माध्यम से निरुद्देश्य प्रेम का चित्रण करना यह भी उपन्यासकार भारती का उद्देश्य रहा है। चन्दर सुधा से बेहद प्यार करता है। लेकिन वह उससे कुछ भी नहीं चाहता। केवल उससे प्यार करता है। उसके जीवन में एक ही विश्वास की चट्टान है और वह है सुधा। वह सुधा को कहता है -- "सुधा, तुम कभी हमपर विश्वास न हार बैठना।"[१] साथ ही वह सुधा के लिए कुछ भी करने को तैयार है। पम्मी उसे अपने रूप के आकर्षक मायाजाल में कुछ देर के लिए फँसा लेती है लेकिन वह उसके प्यार को इस प्रकार स्वीकार करता है जैसे कोई बिमार मार्फिया का इंजेक्शन ले ले। फिर बाद में वह सँभल जाता है, सुधा से माफी माँग लेता है। सपने में सुधा का शरीर माँग लेने की बात का वह पश्चाताप करता है। वह उससे शादी नहीं करना चाहता। वह सुधा से प्यार करते हुए भी अपने कर्तव्यपरायणता-

---

१ डा. धर्मवीर भारती - 'गुनाहों का देवता' - पृ. १११।

को नहीं भूलता वह सुधा को कैलाश के साथ शादी करने के लिए मजबूर कर देता है ।

इस प्रकार सुधा से प्रेम कर उससे कुछ भी पाने का हेतु नहीं है, सिर्फ निरुद्देश्य प्रेम वह करता है जिसका अंत दु:खद होता है ।

(च) नि:स्वार्थ प्रेम --

बिनती के माध्यम से उपन्यासकार ने प्रेम के एक और पहलू का चित्रण किया है -- नि:स्वार्थ प्रेम । चन्दर से बिनती भी बेहद प्यार करती है लेकिन वह उससे कुछ भी नहीं चाहती । वह सिर्फ उसके प्रति समर्पण भाव रखती है । वह खुद अपने मुँह से प्रेम की बातें नहीं करती, अपनी कृति के व्दारा अपने प्रेम को दिखा देती है । एक जगहपर वह यह कहती है कि, "मै नहीं जाऊँगी चन्दर अभी, तुम नहीं जानते । तुम्हारी इतनी ताड़ना और व्यंग्य सहकर भी तुम्हारे पास रही, अब दुनियाभर की लाँछना और व्यंग्य सहकर तुम्हारे पास रह सकती हूँ ।" [१]

बिनती चन्दर से इस प्रकार नि:स्वार्थ प्रेम करती है । वह उसे खुद को कुछ भी करने से रोक नहीं पाती थी । वह स्वयं कुछ न बोलती थी । इस प्रकार प्रेम के नि:स्वार्थ भाव को दिखाना यह भी उपन्यासकार का उद्देश्य रहा है ।

(छ) आदर्श एवं त्यागपूर्ण प्रेम --

प्रेम के इस प्रसंग में गेसू की प्रेमकहानी को भूलाया नहीं जा सकता । गेसू ने अख्तर से प्यार किया और उसने अपने प्यार को शरीर निरपेक्ष रखने का अस्वाभाविक विचार मन में आने तक नहीं दिया । गेसू के लिए अख्तर क्या है यह बताया नहीं जा सकता लेकिन जब अख्तर का ब्याह गेसू की छोटी बहन फूल से हो जाता है तो, वह एकदम टूट जाती है लेकिन उससे बदले की भावना उसके मन में नहीं है । वह उससे नफरत भी नहीं कर सकती । उसके लिए फूल का सुहाग सुबह की अजान से भी पवित्र है । वह नर्स बन जाती है और आदर्श एवं त्यागपूर्ण प्रेम का रूप हमें दिखलाकर सेवाव्रती बन जाती है ।

---

१ डा.धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता' - पृ.२३४ ।

इस प्रकार प्रेम के विविध पहलूओं का चित्रण कर आदर्श एवं त्यागपूर्ण प्रेम के महत्व को लेखक ने प्रस्थापित किया है। गेसू के ही कारण उपन्यास का नायक चन्दर जो पथभ्रष्ट हो गया था, सुधर जाता है।

(३) मध्यवर्गीय जीवन की वृत्ति का चित्रण करना --

यह उपन्यास मध्यवर्गीय जीवन की कहानी है। इसमें डा. शुक्ला जैसे पात्र हैं जो दोहरे व्यक्तित्ववाले हैं --- वे रूढ़ी-परंपराओं का विरोध भी करते हैं, उन्हें मानते भी हैं, छूत-छात का विरोध प्रकट कर स्वयं छूत-छात मानते हैं। शंकरबाबू रीति-रिवाजों का पालन नहीं करना चाहते पर ब्याह पक्का करते समय बहु को माला देकर रस्म का पालन करते हैं।

इस प्रकार लेखक ने मध्यवर्गीयों का विडम्बन दिखाया है। मध्यवर्गीय लोग मॉडर्न होने का बहाना बनाते तथा उनके दिल में कहीं गहरे संस्कार छुपे होते हैं। इसी मध्यवर्गीय लोगों की प्रवृत्ति को दिखाना उपन्यासकार का एक उद्देश्य रहा है।

(४) रूढी परम्पराओं की व्यर्थता को दिखाना --

इस उपन्यास में डा. शुक्ला और बुआ ऐसे पात्र है जो रूढी-परंपराओं के कायल हैं। शुक्ला तो रूढी-परंपराओं पर शोधकार्य करना चाहते हैं जिसका चन्दर भी विरोध करता है लेकिन जब शुक्ला को खुद को ठेंस पहुँचती है तो वे चन्दर से कहते हैं -- "सचमुच जाति, विवाह, सभी परंपराएँ बहुत ही बुरी है। बुरी तरह सड़ गई हैं। उन्हें तो काट फेंकना चाहिए।"[१] इस प्रकार रूढी-परंपराओं की व्यर्थता को दिखाना और समाज-सुधार करना यह भी उपन्यासकार का उद्देश्य रहा है।

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता' - पृ. २५१।

(५) नारी शिक्षा की स्थिति को दर्शाना --

जब यह उपन्यास लिखा गया तब तक (१९४९) लडकियाँ कॉलेज में पढ़ने लगी थी फिर भी उन्हें युनिवर्सिटी में सिर्फ इसलिए नहीं पढ़ाया जाता था कि, वहाँ लड़के पढ़ते हैं। कॉलेज में ठीक से पढ़ाया नहीं जाता था । लडकियाँ कुछ पी न कर पाती थी । गेसू कहती है -- "असल बात तो यह है कि, कॉलेज में पढ़ाई हो तो घर में पढ़ने में मन लगे और राजा-कॉलेज में पढ़ाई नहीं होती । इससे अच्छा सीधे युनिवर्सिटी में बी. ए. करते तो अच्छा था । मेरी तो अम्मी ने कहा कि, वहाँ लड़के पढते हैं, वहाँ नहीं भेजूँगी ।" [१]

उपन्यास नायक चन्दर भी सह शिक्षा का कट्टर विरोधी ही था । इस प्रकार शिक्षा मिलनेपर भी लडकियाँ स्वतंत्र नहीं थी । उस युग की नारी शिक्षा की इसी स्थिति का वास्तविक चित्रण करना भी लेखक उद्देश्य रहा है ।

(६) नैतिक आदर्श की रक्षा करना --

पम्मी वासना की मूर्ति है । वह चन्दर को मोहजाल में फँसा लेती है लेकिन जब उसे पता चलता है कि, चंदर उसका नहीं हैं, उसके दिल में सुधा के सिवा और किसी के लिए स्थान नहीं है और पम्मी के प्यार को उसने बीमार आदमी के मार्फिया इंजेक्शन की तरह स्वीकार किया है, तो वह टूट-सी जाती है और अपने पति के पास वापस जाने का फैसला करती है । पहले चाहे जितना पम्मी का पतन दिखाया गया हो, उसके पति के पास चले जाने से लेखक ने भारतीय नारी के नैतिक आदर्श की रक्षा की है ।

(७) नारी के अंतरंग का चित्रण करना --

बर्टी ने इस उपन्यास में नारी के अंतरंग को खोलकर रखा है । वह मानता है कि, प्रत्येक लड़की एक पति चाहती है और प्रत्येक पत्नी एक प्रेमी । वह अपनी

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता' - पृ. ६१ ।

पत्नी को भी प्रेमी उपहार रूप में देता है। पम्मी भी स्त्रियों के अंतरंग को खोलती है। उपन्यासकारने स्वयं कई स्थानोंपर सुधा के मन को खोल दिया है और उसके मन की स्थितियों को चित्रित किया है।

इस प्रकार नारी के अंतरंग को खोलकर उसका चित्रण कर सुधा और गेसू जैसी आदर्शी प्रेमी स्त्रियों को दिखाना यह भी उपन्यासकार का उद्देश्य रहा है।

(८) मानवी मूल्यों का विघटन दिखाना --

सोनवणे जी ने लिखा है -- "मानव मूल्यों की दृष्टि से प्रस्तुत उपन्यास का विशेष महत्व रहा है। इसका रचनाकाल मूल्यों के बिखराव (विघटन) का समय रहा है। यही कारण है कि,अधिकांश पात्र किसी मानव मूल्य का प्रतिनिधित्व करता है।"[१]

इस उपन्यास मे पम्मी, बर्टी आदि पात्रों के माध्यम से मानवी मूल्यों का विघटन दिखाया है। यही उसका उद्देश्य भी रहा है।

(९) समाज की समस्याओं का चित्रण करना ---

समाज को कई समस्याएँ जैसे दहेज समस्या आदि का चित्रण करना भी उपन्यासकार का उद्देश्य रहा है। बिनती के ससूर बुजेजी शादी से पहले ही बहुत कुछ माँग लेते है और अपनी स्वार्थी वृत्ति को दिखाते है। जाते वक्त पाँच रूपये का नोट दे जाते है। शंकरबाबू भी दहेज लेते है। जातिप्रथा और छूत-छात समस्या को भी इसमें दिखाया है। इस प्रकार ऐसी समस्याएँ दिखाकर समाज-सुधार करना भी उपन्यासकार का उद्देश्य रहा है।

इस प्रकार हम देखते है कि, 'गुनाहों का देवता' यह उपन्यास कई उद्देश्यों को सामने रखकर लिखा गया है फिर भी 'स्त्री-पुरुषों के अंतर्बाह्य सम्बन्धों को परखना',उसका विश्लेषण करना यही इस उपन्यास का मुख्य उद्देश्य रहा है।

---

१ डॉ० चन्द्रभानु सोनवणे -'धर्मवीर भारती : साहित्य के विविध आयाम'- पृ.१४०।

निष्कर्ष --

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि, स्त्री-पुरुष के अंतर्बाह्य संबंधों की परखना, इस उपन्यास का मुख्य उद्देश्य है। इसके साथ ही अपने अन्य उद्देश्यों जैसे - प्रेम के विविध पहलूओं का चित्रण कर आदर्श प्रेम के महत्त्व को प्रस्थापित करना, मध्यवर्गीय जीवन की विशिष्ट वृत्ति का चित्रण करना, रूढी-परंपराओं की व्यर्थता दिखाना, नारी शिक्षा की स्थिति को दर्शाना, नैतिक आदर्श की रक्षा करना, नारी के अंतरंग का चित्रण करना, मानवी मूल्यों के विघटन का चित्रण करना, समाज की समस्याओं का चित्रण कर समाज-सुधार के प्रति लोगों को प्रेरित करना आदि में उपन्यासकार भारती सफल हुए है।